Toppersnotes

Unleash the topper in you

HPSC

हरियाणा लोक सेवा आयोग

Haryana Public Service Commission

भाग – 5

भारत के अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और सामाजिक न्याय

SIERRA INNOVATIONS

विषय-सूची

1.	अंतर्राष्ट्रीय संबंध	1
2.	विदेश नीति	10
3.	गैर संरेखण सम्मेलन	19
4.	सामरिक स्वायत्तता	28
5.	सार्क	32
6.	नेहरू जी की भूमिका	34
7.	भारत और तिब्बत	35
8.	भारत और बांग्लादेश	37
9.	भारत और अफगानिस्तान	41
10.	भारत और उसके समुद्री पडोसी देश	43
11.	भारत और पाकिस्तान	47
12.	पूर्व भारत और दक्षिण पूर्व भारत	51
13.	सिंधु जल संधि	52
14.	भारत और म्यांमार	54
15.	भारत और वियतनाम	57
16.	भारत और जापान	59
17.	भारत और दक्षिण कोरिया	61
18.	दक्षिण चीन सागर	62
19.	भारत और अमेरिका	64
20.	पश्चिम एशिया	67
21.	भारत की विदेश नीति	69
22.	सीरिया और आईएस इश्यू	73
23.	इजराइल	77
24.	अरब देश	79

25. ईरान 82
26. मध्य एशिया 85
27. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद 87
28. भारत और चीन 90
29. भारत और अमेरिका 94
30. भारत और रूस 99
31. ब्रिक्स 103
32. भारत और यूरोप 105
33. अफ्रीका 108
34. लैटिन अमेरिका 112
35. परमाणु हथियार और संबंधित नीतियां 113
36. समुद्री क्षमताएं और मुद्दे 117
37. प्रवासी भारतीय 121
38. आईसीजे और आईसीसी 124
39. विश्व व्यापार संगठन 126

विषय-सूची

सामाजिक न्याय

1.	विकास का मॉडल	130
2.	भारत में विकास	134
3.	नियोजित विकास	135
4.	बाल श्रम	141
5.	बंधुआ मजदूर	148
6.	भारत में श्रमिक	151
7.	अल्पसंख्यक समुदाय	156
8.	अल्पसंख्यक विकास नीति एवं विकास कार्यक्रम	159
9.	किन्नर	164
10.	अनुसूचित जनजाति	168
11.	राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग	172
12.	महिलायें	178
13.	पंचायती राज एवं महिला सशक्तिकरण	185
14.	मानव संसाधन विकास	186
15.	भारतीय सीमा प्रबंध	192
16.	मानव प्रवास व भारत	195
17.	नागरिकता संशोधन विधेयक 2019	200

18. अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं

1. संयुक्त राष्ट्र संघ 202

2. विश्व स्वास्थय संगठन 206

3. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संघ 209

4. विश्व व्यापार संगठन 212

5. विश्व बौद्धिक संगठन 214

6. अंतर्राष्ट्रीय वित निगम 217

7. विश्व बैंक समूह 218

8. दक्षेस 223

9. गैर सरकारी सहायता समूह (नजीओ) 227

10. स्वयं सहायता समूह (एसएचओ) 231

अंतर्राष्ट्रीय संबंध
International relation

- **India + world relation.**
- **Globalization**
- **Issues b/w india & world**
- **Agreements**

Actors in International relations -

- **Countries (** वैश्विक प्रणाली की प्रमुख ईकाईया (परिभाषा मूलत भौगोलिक)
- **Regional organizations**
  ऐसा संगठन जो एक क्षेत्र विशेष में कार्यरत हो **Saarc, Asean**
- **International organisations** . (संगठन , जिसकी भूमिका विश्व व्यापी)
- **INGOS** (अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत संघटन, **IOC**)
- **MNC (multinational companies)**
- **State** (क्षेत्र, आबादी, सरकार, सम्प्रभुता, जिसमें क्षेत्र -भौगोलिक
- जनसंख्या - स्थायी
- सरकार - शासन, व्यवस्था
- **Montevideo convertion on the right and duties of states.**
- दक्षिणी एवं उत्तरी यूएसए के देशों के सम्मेलन के माध्यम से समझौता ।
- निर्णय,
- विश्व -व्यापी महत्व
- बहुत सारे देशों के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य की संकल्पना का स्पष्ट निर्धारण ।
- स्थायी जनसंख्या निश्चित भौगोलिक क्षेत्र
- शासन तंत्र चलाने के लिए सरकार
- अन्य राज्यों के साथ सम्बंध स्थापित करने की क्षमता से ।
- मोन्टवीडियों कन्वेन्षन से सम्बंधित चार तथ्य ।
- इस संधि में अंतराष्ट्रीय कानून में संघीय राज्य को मान्यता मिलती है उसकी ईकाईयों को नही ।

सम्प्रभुता :-

- किसी अन्य राज्य के अधीन न होना
- घरेलू एवं बाह्य संबधो में अंतिम निर्णय लेने की क्षमता।
- अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत वैधानिक दृष्टिकोण से अन्य राज्यो के समकक्ष होना।
- प्रत्येक राज्य अपनी सीमाओं के अन्दर स्वतंत्र है उसकी अखण्डता का सम्मान किया जाता है एवं अन्दर उसके बाह्य हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

सीमाएँ :-

- विभिन्न राज्यो में सैन्य, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षमता आदि में बहुत अन्तर होता है जिसके कारण व्यवहार में आत्मनिर्णय की क्षमता अक्सर सीमित हो जाती है जिससे उन्हे अन्य राज्यो के प्रभाव या दबाव में कार्य करना पडता है।
- International Relation में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों एवं अंतर्राष्ट्रीय कानूनों में राज्य को ही मूल ईकाई माना जाता है।

- आधुनिक राज्य व्यवस्था जिसकी शुरूआत यूरोप से हुई Treaty of Westphalia के बाद यह व्यवस्था विश्व व्यापी हो गई।
- विश्व में कई उदाहरण ऐसे है जिनमें राज्य का लक्षण है परन्तु विभिन्न कारणों से उन्हे व्यापक तौर पर राज्य की मान्यता नहीं दी गई क्योकि अन्य कुछ राज्यों द्वारा उनकी क्षमता पर सवाल उठाया गया है।

  Example – Kasovo (Serbia का एक भाग जो कि अब एक अलग राज्य है) IR of Kasovo with USA Germany, Japan
- परन्तु Serbia द्वारा इसे अलग राज्य की मान्यता नहीं दी गई जिसके पीछे तर्क है कि अलगाववाद का उदा. है जो कि विदेशी हस्तक्षेप का परिणाम जिसमे Serbia के समर्थन में China, Russia आदि राज्य है।
- Kasovo, UN में शामिल नहीं एवं इसे विश्व–व्यापी मान्यता भी नहीं प्राप्त है।

<u>ताईवान</u> :–

- जनसंख्या मूलतः चीनी मूल से।
- चीन द्वारा 1949 में communist शासन स्थापना के समय चीन के पुराने शासन वर्ग (KMT Party related) जो कि युद्ध में हार के कारण ताईवान निर्वासित होकर इन्होने राजधानी ताईपे में स्वंय सरकार की स्थापना की।

<u>समस्या</u> :–

- (KMT) Ministers का दावा कि वही वास्तविक चीनी शासक केवल ताईवान के ही नहीं।

<u>तर्क</u> :–

- चीन के ऊपर communist कब्जा, अवैध एवं कानूनी दृष्टिकोण से चीन एवं ताईवान दोनो के शासक यही है।

<u>निष्कर्ष</u> :–

- विश्व के अधिकतर देशों में चीन को मान्यता जबकि ताईवान को कुछ गिने – चुने देशों द्वारा ही मान्यता देते है क्योकि ये देश ताईवान से आर्थिक सहायता प्राप्त करते है। Ex. Tuvalu (South Pacific Region)

  व्यवहारिक तौर पर ताईवान स्वतंत्र एवं सम्प्रभु ईकाई है परन्तु अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत आज उसकी मान्यता नहीं है दुनिया के अधिकतर राज्यो द्वारा माना जाता है कि चीन एक ही है एवं ताईवान उसका एक भाग है।

<u>Nation :-</u>

- लोगो का एक समूह।
- समान भाषा, साझी परंपरा।
- संस्कृति, धर्म, ऐतिहासिक चेतना या जातीयता से ।
- बंधन का एहसास।
- सभी लक्षण होने आवश्यक नहीं, कुछ लक्षण भी राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने में सफल हो सकते है।
- राष्ट्र लोगों की भावना एवं सोच पर आधारित है न कि कानूनी आधार पर ।

- एंडरसन द्वारा इस बात की ओर ध्यान दिया गया कि राष्ट्रवाद मूलतः प्राकृतिक नहीं बल्कि यह लोगों के प्रयासों से विकसित एवं कल्पना पर आधारित होता है। Imagined Communities Written By Benedict Anderson
- राष्ट्र के लोग एक दूसरे से अक्सर अपरिचित फिर भी उनके मध्य राष्ट्रीयता की भावना के आधार पर सम्बंध जुड जाता है। Concept of Nationalism by Ernest Getnier
- राष्ट्रवाद की स्थिति स्थिर नही होती इसमें बदलाव होना सम्भव।
- राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न, उनका मानना है कि इनकी अलग ऐतिहासिकता, संस्कृति एवं UK के अन्य लोगों से जलग पहचान होने के कारण। UK – England, Scotland, wales, North Ireland
- राष्ट्रीयता की भावना में उतार-चढाव होता रहता है। Scotland में पिछले कुछ दशको में राष्ट्रीयता मजबूत हुई एवं वहाँ की क्षेत्रीय संसद में SMP सत्ता में आयी जिसका तर्क कि Scotland की अलग राष्ट्रीयता है और इस आधार पर को अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक स्वतंत्र राज्य बनना चाहिए। जिसके लिए में एक जनमत संग्रह हुआ परंतु उस समय अलग राज्य एवं स्वतंत्रता की मांग को कुछ मतो के अंतर से पराजित होना पडा।

<u>नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था</u> :-

- 1945 के बाद जब गुटो पर आधारित शीतयुद्ध जारी रहा तभी तीसरी दुनिया के नये स्वतंत्र देशों द्वारा इस दोनो गुटो से अलग गुटनिरपेक्ष आन्दोलन चलाया गया। इसमें शामिल देश अल्पविकसित राष्ट्र के सामने मुख्य चुनौती अपनी गरीबी से निपटते हुए आर्थिक विकास करना था। आगे चलकर U.N. द्वारा इन क्षेत्रो के विकास के लिए सुधार प्रस्ताव किये गये जिनके आधार पर नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की संकल्पना विकसित हुई

  इस संकल्पना के तहत तीन मुख्य बाते –
  1. अल्पविकसित देश अपने संसाधनो पर अपना नियंत्रण रख सके।
  2. पश्चिमी देशों द्वारा उनका दोहन न किया जा सके।
  3. अल्पविकसित देश पश्चिमी देशो के बाजार में अपनी पंहुच बनाएँ एवं आर्थिक अंतर्राष्ट्रीय संस्थानो में अपनी भूमिका बढाये ।

<u>सभ्यता-संघर्ष अवधारणा</u> :-

- इस अवधारणा की उत्पत्ति 90 के दशक के प्रारंभ में Political Scientist of America, Samual Hatington's Book "Clash of Civilization" 1992 से हुई।
- इसके अनुसार 1991 में Cold War की समाप्ति के बाद ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई जिसमें अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के कारण वैचारिक या आर्थिक न होकर सांस्कृतिक होने लगें (मूलतः धर्म, इसाई एवं इस्लाम के मध्य)

North Korea – USA, Japan, China

Nation (जिसका स्पष्ट निर्धारण नहीं एवं प्रकृति अस्पष्ट वस्तु महत्पूर्ण है।)

Nation – state - (इसमें दोनों संकल्पनाऐ शामिल हाती है जिसका अर्थ एक ऐसा राज्य जिसमें निवास करने वाले अधिकतर लोग एक ही राष्ट्रीयता से जुडे हुए हो)

यहाँ रहने वाले लोग समान भाषा, इतिहास, नृजातिया आदि से जुडे रहेगे परंतु उनके राष्ट्र को एक वैधानिक रूप भी प्रदान किया जाता है।

- राज्य एक सरकारी ईकाई जिसके पास कर वसूलने का तंत्र, सरकारी मशीने एवं सैन्य बल आदि होते है।
- राष्ट्र – राज्य :- जापान, इटली, फ्रांस, जर्मनी, यूरोप में
- ये ऐसे राष्ट्र हो सकते है जिन्हे राज्य का स्वरूप नहीं प्राप्त है अर्थात् वहाँ के लोग विभिन्न प्रकार के बंधनो से जुडे हुए एवं स्वंय को एक राष्ट्र का भाग मानते है परंतु राज्य के तौर पर स्वंय को स्थापित नहीं कर सके।

जैसे –

1. कुर्द समुदाय के लोग नृजातीय एवं भाषीय आधार पर साथ ही सांस्कृतिक आधार पर स्वंय को एक राष्ट्र मानते है परंतु इनका कोई राज्य नहीं है। कुर्द, तुर्की, ईरान, इराक, सीरिया, अजरबैजान ऐसे राज्यो में बटे हुए है एवं इनकी मांग है कि इन सभी राज्यो के सभी लोगो को मिलकर कुर्दिस्तान राज्य का गठन किया गया। इसमे क्षेत्र में जितने भी राज्य वे कुर्दिस्तान राज्य की मांग को नामजूंर कर दे ।
2. फिलीस्तीनी लोग भी स्वंय को एक राष्ट्रीय मानते है परंतु फिलीस्तीन को आज तक राज्य का दर्जा नहीं दिया गया है। जो कि Stateless Nation के अंतर्गत आते है ।

National self Determination :-

- एक समूह के लोग जिनके द्वारा दावा किया जाता है कि वे एक राष्ट्र के है एवं उन्हे सामूहिक तौर पर अपने भविष्य के संदर्भ मे निर्णय करने का अधिकार होना चाहिए। उदाहरण के लिए कुर्द समुदाय एवं फिलीस्तीनी समूहो की मांग।
- भविष्य में इन्हे आत्मनिर्णय का आधिकार होना चाहिए।
- विश्व में कई ऐसे राज्य जहाँ रहने वाले लोग एक राष्ट्रीयता के नहीं है अक्सर राज्य के क्षेत्र निर्वासित लोगों की अपनी अलग-अलग पहचान होती है एवं यदि एक पहचान बहुत मजबूत हो तो वे अपने को एक अलग राष्ट्र मान सकते है।

Multi National state :-

- एक राज्य जिसमें रहने वाले लोग अलग राष्ट्रीयता से संबंधित हो उदाहरण के लिए युगोस्लाविया (Socialist Federal Republic of Yugoslavia) (Serbia, Croatia, Bosnia Kasovo and Macedonia)1991 तक के सभी क्षेत्र युगोस्लाविया के भाग थे जो कि एक बहुराष्ट्रीय राज्य माना जाता था। 1991 के बाद, इन राष्ट्रो में राष्ट्रीयता की भावना मजबूत हुई एवं Yugoslavia अनेक हिस्सों में विभाजित हो गया एवं ये राष्ट्र अलग-अलग राज्य बन गये।

  MNS में अस्थिरता का भी खतरा होता है कुछ परिस्थितियों में जब राष्ट्रीयता की भावना बहुत मजबूत हो जाने पर राज्य का विघटन हो सकता है उदा. युगोस्लाविया एवं S.U.

  "Muslims of India Separate Nation"
  Two Nations Theory – (Region Based)
  (Rejected by Indian Leader)

  इसी दृष्टिकोण से भारत पर भी सवाल उठाया जाता है जिसमें भारत के उत्तर पूर्व राज्यो (जो कि अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में नहीं) में भी कई स्थानों (मणिपुर, नागालैण्ड, त्रिपुरा, असम, मेघालय आदि) में ऐसे लोग जो एक अलग राष्ट्र की सोच रखते है एवं उन्हे भी आत्म निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए एवं साथ ही अंतर्राष्ट्रीय राज्य बनने का अवसर मिलना चाहिए। जो कि भारत से स्वतंत्र होगा।

जम्मू कश्मीर के संदर्भ मे,

- धर्म आधारित राष्ट्रीयता (पाकिस्तान द्वारा दावा) इस आधार पर पाकिस्तान की मांग कि कश्मीर घाटी पाकिस्तान का भाग होना चाहिए।
- एक विशिष्ट पहचान के आधार पर कश्मीर को अलग राष्ट्रीयता की बात करते है एवं वे कश्मीर को एक सम्प्रभु राष्ट्र राज्य के तौर पर देखना चाहते है। Ex. Jammu Kashmir Liberation Front
- भारत का दृष्टिकोण कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है एवं कश्मीर भी भारत की राष्ट्रीय विविधता का उदाहरण है, कश्मीर के अधिकतर लोग भारत के साथ रहना चाहते है।

Civil Nationalism :-

अर्थ – अलग पृष्ठभूमि के लोग जिनको एक दृष्टिकोण से अलग राष्ट्रीयता का माना जा सकता है वे एक साथ आकर एक राज्य के क्षेत्र में रहे एवं उन लोगों में उस राज्य के प्रति निष्ठा की भावना विकसित हो इस निष्ठा की भावना का आधार राज्य की संवैधानिक व्यवस्था, राज्य की राजनीतिक प्रणाली हो सकती है। एवं समाजशास्त्रियो का मानना है कि इस तरीके से एक नए किस्म के राष्ट्रवाद का विकास होता है जो परंपरागत राष्ट्रवाद से भिन्न एवं इसे ही Civil Nationalism की परिभाषा दी गई है। USA के मामलो में यह बहुत महत्वपूर्ण क्योंकि USA के लोग पूर्व में यूरोप के विभिन्न भागों से एवं बाद में दुनिया के अन्य भागो से भी आकर वहाँ बस गये उदाहरण स्वरूप अंग्रेजी मूल के लोग, इटालियन, जर्मन, आईरिश, डच, फ्रेंच एवं साथ ही दक्षिण एवं मध्य अमेरिका से भी आकर लोग बस गये। हाल ही (2014) में USA में सर्वाधिक भारतीय मूल के लोग बसे हुए एवं दूसरे स्थान पर चीन के लोग आकर बसे।

USA – Melting Pot

- कनाडा में अंग्रेजी, फ्रेंच एवं साथ ही भारतीय व चीन के लोग भी बसे हुए है।
- भारत में, भी नागरिक राष्ट्रवाद का महत्व है।
- पाकिस्तान का निर्माण धर्म आधारित राष्ट्रवाद के सिद्धांत से हुआ था। समय बीतने के साथ – धार्मिक राष्ट्रवाद कमजोर हुआ एवं राष्ट्रीयता को प्रभावित करने वाले अन्य तत्व जैसे – भाषा, नृजाति, संस्कृति, ऐतिहासिक अनुभव आदि का महत्व बढा जिससे पाक में समस्या उत्पन्न हुई जिसमें पूर्वी पाकिस्तान के लोगों द्वारा पाकिस्तान से अलग होने के निर्णय के बाद बांग्लादेश का निर्णय हुआ एवं वर्तमान में बलूचिस्तान, उत्तर पूर्व सीमान्त में सिंध के कुछ इलाको में FATA का निर्माण के लिए इन सभी क्षेत्रो में स्थानीय पहचान के आधार पर विभिन्न किस्म के आन्दोलन, अलगाव वादी संगठन आदि उभर कराये एवं इनसे पाक की एकता को भी खतरा माना जाता है।
- तिब्बत में भी राष्ट्रवादी आन्दोलन वहां के लोगों द्वारा अलग राष्ट्रीयता के आधार पर जिसे चीन द्वारा कुचलने का प्रयास किया गया जा रहा है।
- तिब्बत के सर्वोच्च नेता दलाई लामा के कथनानुसार एक अलग राष्ट्र मांग न होकर चीन के अन्दर ही तिब्बत की अलग पहचान की मान्यता एवं तिब्बत की स्वायत्ता चाहते है।

Concept of Power in International Relation :-

- शक्ति, राज्य के साथ जुडा होता है यह सम्पति के तौर पर नहीं होता है। शक्ति एक क्षमता होती है जो अपने उद्देश्यो को प्राप्त करने एवं दूसरे राष्ट्रों को भी अपने प्रयोजन, उद्देश्यो की पूर्ति के लिए प्रभावित करने में सहयोगी।
- आधुनिक विश्व में सामान्यतः माना जाता है कि आर्थिक शक्ति सबसे महत्त्वपूर्ण होती है एवं इसके आधार पर अन्य प्रकार की शक्ति का विकास हो सकता है।

- USA, 20th Century में विश्व की प्रमुख के रूप में उभरा। US आर्थिक क्षमता के आधार पर एवं सैन्य तौर पर भी सबसे शक्तिशाली राज्य बन गया।
- China Economical Area विश्व में दूसरे स्थान पर आ गया है एवं इस आर्थिक क्षमता का उपयोग कर अपनी सैन्य क्षमता को भी तेजी से बढा रहा है। परंतु चीन की प्राथमिकता आर्थिक क्षमता पर ही है। यदि कोई देश सीमित आर्थिक क्षमता होते हुए भी अत्याधिक सैन्य क्षमता विकसित करने की कोशिश करे बहुत ज्यादा व्यय सैन्य क्षेत्र पर करे तो उसे गम्भीर संकट का सामना करना पड सकता है।

  उदाहरण – Union of Soviet Socialist Republic (सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ)

  समाजवादी प्रणाली का सर्वोतम उदाहरण
  मार्क्स–लेनिनवादी विचारधारा से प्रभावित
  1917 में स्थापित 1991 में विघटित

आर्थिक क्षमता – विभिन्न संसाधनों पर निर्भर करती है

- भौतिक संसाधन (खेत, खनिज)
- पूंजीगत /वित्तीय संसाधान (निवेश की क्षमता हेतु)
- मनव संसाधन।

  ऐसे कई उदा. कि कोई राज्य भौतिक संसाधन के मामले में सम्पन्न नहीं होने के बावजूद मानव संसाधन के आधार पर बहुत शक्तिशाली राष्ट्र/राज्य बन गया है। उदा. जापान।

<u>प्रौद्योगिकी</u> :–

- आज की दुनिया में आर्थिक एवं सैनिक दोनो प्रौद्योगिकी पर निर्भर करते है। USA के सबसे शक्तिशाली राज्य बनने में प्रोद्योगिकी का बहुत बडा योगदान था। प्रौद्योगिकी उपयोग से अन्य संसाधानो का विकास एवं अन्य संसाधनों का विकास एवं अन्य क्षमताओं का विकास एवं साथ ही बेहतर उपयोग हो सकता है।

<u>उद्यमिता</u> :–

- संसाधनों के इस्तेमाल करने की क्षमता एवं उनको संगठित करना। जो लोग नया व्यवसाय शुरू करते है या उत्पादन करते है उन्हे उद्यमी कहा जाता है एवं उनकी यह क्षमता उद्यमिता कहलाती है।

<u>संसाधनो का उपयोग :–</u>

- संसाधन उपयोग के लिए अवसंचारण का विकास आवश्यक क्योंकि इसी से संसाधन उपयोग बेहतर होता है। उदा. संचार, परिवहन, ऊर्जा आपूर्ति, सामाजिक अवसंचारण, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाऐ आदि।

ऐतिहासिक अनुभव अनुसार,

- जिन क्षेत्र/राज्यो के पास आर्थिक क्षमता अधिक रही है उन्ही की सैन्य क्षमता अधिक शक्तिशाली रही है। दीर्घकाल से यही दृष्टिकोण रहा है।

  प्रतिव्यक्ति आय भी महत्वपूर्ण

  बडा देश कम/व्यक्ति आय के बावजूद उसकी GDP अन्य देशों की अपेक्षा अधिक होती है जैसे चीन, जापान

सैन्य क्षमता :–

- इसमे सैन्य बलो की संख्या, हथियारो की मात्रा एवं प्रौद्योगिकी स्तर, सैन्य बल प्रशिक्षण स्तर ।

Concept of Soft Power :-

संकल्पना joseph s. nye द्वारा दी गई।

यह शक्ति आर्थिक एवं सैन्य संसाधनो से भिन्न है। ये राज्य के बाह्य प्रभाव को दर्शाता है। यदि प्रभाव अच्छा तो अन्य राज्य उनकी विचारों का गंभीरता से लेकर उसके साथ सहयोग करने के लिए तैयार होगें।

NYE के अनुसार, soft power के प्रमुख तत्व–

Culture:-

Political values & institutions (अन्य लेखकों द्वारा)
ऐसे राजनीतिक मूल्य जिसका वो व्यवहार में अनुसरण करता है। जैसे – मानवाधिकार, लोकतंत्र।

Foreign policy :-

ऐसी विदेश नीति जिसे अन्य लोग वैद्य माने एवं इस नीति में नैतिक प्राधिकार भी हो।
अन्य लेखको द्वारा इसका विस्तार कर इसमें कुछ तत्व जोडे गये जिनमें मुख्यतः –

(1) **Education** :-

- Eg - US, UK Education System में बहुत आगे जिसमे Higher institution system है।

(2) Institution :-

- Eg – संसदीय संस्थाएँ, न्यायपालिका, कार्यपालिका आदि।

(3) Bussiness & innovation :-

- व्यवसाय एवं नवाचार की संकल्पना को उभारना जिससे राज्य/क्षेत्रीय विकास को सहयोग प्राप्त हो एवं एक नयी दिशा मिल सके। उचित नीति के लिए Hard & Soft Power दोनो पर ध्यान दिया जाये साथ ही सन्तुलन समन्वय एवं विकास किया जाये।

Smart Power :-

- दोनो प्रकार को क्षमताऐ हो एवं परिस्थितियो के अनुसार उनका प्रभावी उपयोग किया जाये।
  Soft power, अक्सर धीमा परिणाम देता है। लेकिन कम खर्चीला होता है। एवं अक्सर प्रभावी भी सिद्ध होता है।

भारत की Soft Power जैसे – क्रिकेट, बॉलीवुड, अध्यात्मिकता Confucius Institutes (China is Soft power) योग आदि ।
भारत के पास Soft Power के व्यापक संसाधन है परंतु इसका प्रभावी उपयोग कुछ वर्षो से ही शुरू हुआ है।

Soft Power के प्रमुख तत्व भारतीय संदर्भ में :–

- आध्यात्मिकता ।
- योग परंपरा।

- धार्मिक – परंपरा (बोद्ध धर्म – अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव)
- सांस्कृतिक तत्व (नृत्य, संगीत, Movie, T.V., Serials)
- लोकतांत्रिक संस्थाऍ
- विशिष्ट संस्कृति एवं समाज (आन्तरिक एवं बाह्य प्रभावो का मिश्रण)
- अहिंसावादी सिद्धांत।
- भारतीय भोजन (पानशैली)

इन तत्वो के बेहतर उपयोग करने के लिए भारत सरकार ने बहुत से महत्पूर्ण कदम उठाऐ है।
PDD – Public Democratic Division
ICCR - Indian Council for Cultural Relations

– पिछले कुछ वर्षों से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर।

Increadible India अभियान जो भारत के सामाजिक सांस्कृतिक विषेशताओ को विश्व के सामने उपस्थित करता है जैसे Look East एवं Look West दोनो में भारत की Soft Power के ऊपर जोर दिया गया है।

PM Narendra modi के कार्यकाल में Soft Power resources पर विशेष जोर दिया गया है एवं इस संबंध में भारतीय diaspora के प्रभावी उपयोग की कोशिश की गई है। इसी संदर्भ में PM के USA, UK, UAE Australia etc की यात्राओं में diaspora के साथ बहुत कार्यक्रम आयोजित किये गये एवं इनका कार्यक्रमो में भारत के Soft Power resources को प्रदर्शित किया गया।

Balance of power :-

- अंतर्राष्ट्रीय संबंध में शक्ति संतुलन का उपयोग बहुत समय से हो रहा है। प्राचीन भारत मे भी इस तरह की संकल्पना का प्रभाव था। इसका सामान्य अर्थ है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में विभिन्न राज्यो की अपनी-अपनी शक्ति होती है एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कोई शासन प्रणाली न होने के कारण एक राज्य की शक्ति से दूसरे राज्य के लिए जोखिम पैदा हो सकता है।
- अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में शक्ति संतुलन का तरीका अपनी शक्ति को बढाने की कोशिश ताकि सम्भावित खतरे से निपटा जा सके एवं अन्य राज्यो के साथ गठबंधन बनाना ताकि संतुलन की स्थापना की जा सके एवं यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसी एक राज्य का वर्चस्व नहीं स्थापित है।

आज के उदाहरणो में,
पिछले कुछ वर्षो में चीन की शक्ति तेजी से बढी है। जिसे कहा गया है। इससे कुछ अन्य राज्यो के लिए खतरा हो सकता है जैसे जापान, दक्षिणी पूर्वी एशियाई राज्य, भारत आदि।

ऐसी स्थिति में कई विशेषज्ञ शक्ति संतुलन के सिद्धांत के उपयोग की सलाह देते है यानि जिन राज्यो के लिए चीन से जोखिम वे राज्य अपनी क्षमता को बढाये एवं चीन को संतुलित करने के लिए गठबंधन का प्रयास करे। जिससे विशेष तौर पर USA का नाम लिया जाता है।

BOP की नीति खतरनाक भी हो सकती है क्योकि इसमें तनाव बढेगा। हथियारो की दौड तीव्र होगी एवं कई बार इसके फलस्वरूप युद्ध की स्थिति पैदा हो जाती है। विशेष तौर पर First World War में BOP सिद्धांत की भी भूमिका मानी जाती है।

इसी कारण से भारत, जापान, USA आदि से अपने सामरिक सहयोग को बढा रहा है । परंतु भारत यह बार-बार स्पष्ट करता है कि यह सहयोग चीन के विरूद्ध नहीं है।

National interest (NI) :-

IR में राज्य सामान्यतः अपने National interest के आधार पर काम करते है राष्ट्रीय हितो में राज्य की सुरक्षा स्थिरता आर्थिक विकास आदि महत्वपूर्ण होते है।

- NI की कई स्पष्ट व्याख्या या निर्धारण करना बहुत मुश्किल होता है अक्सर उसके संबंध में विवाद होता है। अलग राजनीतिक दल या सामाजिक वर्ग या क्षेत्रीय संगठन/ईकाईया इसकी अलग है व्याख्या करते है।

Eg. - TPP की नीति समझौता कराने में USA की मुख्य भूमिका थी परंतु में भी इस समझौते का सर्वाधिक विरोध हो रहा है। एक तरफ राष्ट्रपति ओबामा एवं USA के बहुत सारे व्यवसायिक ईकाईया एवं संगठन इसे राष्ट्र हित में मानते है।

दूसरी तरफ Donald Trump ने इसे NI के विरूद्ध बताया एवं पूर्णतः नामंजूर करने की बात कही एवं साथ ही हिलेरी क्लिंटन ने भी इसके वर्तमान स्वरूप का विरोध किया है।

- BOP की व्याख्या स्पष्ट तौर पर नहीं परंतु फिर भी आम सहमति बनाने को कोशिश जिसके आधार पर राज्य काम करता है। लेकिन अक्सर राज्य अपने राष्ट्रीय हित निर्धारण में त्रुटि करते है बाद में जिसकी कीमत चुकानी पडती है।
  उदा0 USA के मामले में, इराक में हस्तक्षेप माना जाता है कि यह USA National Interest से बाहर था जिससे USA को क्षति हुई।
- भारत में 1972 में समझौता के प्रावधान में माना जाता है कि ये दीर्घकालीक राष्ट्रीय हित में नहीं था।

विदेश नीति
Foreign Policy

- अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अन्य राज्यो के साथ संबंधो की स्थापना एवं संचालन के विषय में नीति।
- विदेश नीति के माध्यम से कोई राज्य की सरकार अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने की कोशिश करती है।
- सामान्यतः नीति का निर्धारण तर्कसंगत आधार पर होना चाहिए लेकिन अक्सर राज्य अल्पकालिक प्रभावो के महत्व के मसलो से प्रभावित होकर राष्ट्र हित की गलत व्याख्या करते है एवं अनउपयुक्त नीतियो को भी अपनाते है।
- इससे आम जीवन में भी लोग एक भावना से प्रभावित होते है इसे Lose of Face के नाम से जाना जाता है।
- विदेश नीति के मामले में सुझाव ये दिया जाता है कि व्यापक विचार विमर्श करके विभिन्न दलो, विचारो के मध्य सहमति बनाने का प्रयास होना चाहिए जिसमे वास्तविकताओं को ध्यान में रखा जाये एवं वस्तुनिष्टता के अनुसार काम करना चाहिए एवं दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- विदेश नीति संतुलित होनी चाहिए सरकारो के बदलने से विदेश नीति में कोई बहुत बडा परिवर्तन होना चाहिए।
- विदेश नीति में महत्वपूर्ण है जिससे स्थिरता एवं निरन्तरता रहे । विदेश नीति को कार्यान्वित करने के लिए कूटनीति की सहायता ली जाती है जिससे राज्यो द्वारा एक दूसरे के राज्यो में राजदूतो को भेजना।
- वियना कन्वेशन जिसके द्वारा राजदूत एवं अन्य राजनायको के संबंध में अन्तर्राष्ट्रीय आचरण निधारित होता है। राजदूतो को विशेष दर्जा प्रदान किया जाता है।
- स्थानीय सुरक्षा बल राजदूत की अनुमति के बिना दूतावास में प्रवेश नहीं कर सकते परंतु दूतावास की रक्षा करना उनकी जिम्मेदारी है। राजदूतो को हिरासत में नहीं लिया जा सकता जिसे कहा गया एवं राजनायको के परिवारो को इसी प्रकार का संरक्षण दिया जाता है।
- कूटनीतिक संरक्षण प्रदान करने का उद्देश्य विभिन्न राज्यो के मध्य कूटनीतिक संबंधो को संरक्षण देना एवं यह सुनिश्चित कटना कि राजनायक अपनी जिम्मेदारियाँ बिना किसी भय के स्वतंत्रतापूर्वक निभा सके एवं इसमें सभी राज्यो का हित माना जाता है जो कि कानून पर आधारित है।

Foreign Policy “After 1857 till Now" :-

1857 के बाद भारत पूरी तरह से ब्रिटिश उपनिवेश बन गया। अंग्रेजो ने अपने स्वार्थो के अनुसार भारत की शिक्षा प्रणाली प्रशासन व्यवस्था आदि को ढाला। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता से पूर्व भारत की कोई विदेशनीति नहीं थी क्योकि भारत ब्रिटिश सत्ता के अधीन था। परंतु विश्व मामलो में भारत की एक सुदृढ परम्परा रही है।

- स्वतंत्रता से पूर्व ही विदेश नीति की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने एक प्रेस कांफ्रेस में कहा था कि वैदेशिक सम्बन्धो के क्षेत्र में भारत एक स्वतंत्र नीति का अनुसरण करेगा एवं गुटो की खीचतान से दूर रहते हुए संसार के समस्त पराधीन देशो को आत्मा निर्णय का अधिकार प्रदान करने तथा जातीय भेद-भाव की नीति का दृढता पूर्वक उन्मूलन कराने का प्रयत्न करेगा। साथ ही वह दुनिया के शांति प्रिय राष्ट्रो के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सदभावना के प्रसार के लिए भी निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा।

  नेहरू का यह कथन भारतीय विदेश नीति के आधार स्तम्भ के रूप में आज भी है।
- भारतीय विदेश नीति की मूल बातो का समावेश संविधान के अनुच्छेद-51 में कर दिया गया है। जिसके अनुसार राज्य अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढावा देगा। राज्य/राष्ट्रो के मध्य न्याय एवं सम्मानपूर्वक संबंधो को बनाये रखने का प्रयास करेगा एवं अंतर्राष्ट्रीय संधि व कानून का सम्मान में अन्तर्राष्ट्रीय विवादो को निपटने की रीति को बढावा देगा।

भारतीय विदेश नीति के उद्देश्य :-

- अपने मित्र देशों के साथ अर्थात पडोसी देशों के साथ मैत्री पूर्ण व्यवहार करना एवं संबंध सहयोग को मजबूत करना।
- स्थायी विश्वास एवं सूझबूझ का पडोसी देश के साथ संबंध स्थापना हेतु वातावरण तैयार करना।
- अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा हेतु हर सम्भव प्रयास करना।
- अंतर्राष्ट्रीय विवादो को मध्यस्थता द्वारा निपटाये जाने की नीति को प्रत्येक सम्भव तरीके से प्रोत्साहन देना।
- सभी राष्ट्र एवं राज्यो के मध्य सम्मानपूर्ण संबंध बनाये रखना।
- सैनिक गुटबंदी एवं सैनिक समझौता से स्वंय को पृथक करना एवं ऐसी गुटबंदी से दूरी बनाकर रखना।
- उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद का विरोध करना चाहे वे किसी भी रूप में हो।
- सभी देशों के साथ व्यापार उद्योग निवेश एवं प्रौद्योगिकी के अंतरण और अन्य कार्यमूलक क्षेत्रो में सहयोग का व्यापक आधार परस्पर लाभप्रद एवं सहयोगी ढांचा विकसित करना।
- द्विपक्षीय संबंधो को बढाने एवं शांति स्थिरता तथा बहुध्रुवीय स्थिति को मजबूत करने की दिशा में कार्य करने के लिए दंड देशों एवं अन्य प्रमुख शक्तियो के साथ कार्य करना शामिल है।
- अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष आ रही जटिल एवं उच्च स्वरूप की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का हल निकलने के लिए अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय तथा UN गुटनिरपेक्ष आन्दोलन जैसी बहुपक्षीय संस्थाओं एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनो में रचनात्मक कार्य करना।
- इनमें शांति एवं सुरक्षा के साथ-साथ सार्वभौतिक भेदभाव रहित स्वरूप में निशक्तजन, न्यायोचित और तर्कपूर्ण भेदभाव रहित अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना; सार्वभौगिकीकरण,पर्यावरण, जनस्वास्थ्य आंतकवाद और विभिन्न रूपो में अतिवाद, सूचना क्रांति, संस्कृति एवं शिक्षा आदि शामिल है।

  विदेश सम्बंध (Foreign relation)
  विदेश नीति (Foreign policy)
  कूटनीति (Diplomacy)

  विदेश संबंध, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष में राज्यो एवं अन्य ईकाईयो के बीच संबंध जैसे- अन्तर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठन।

  Eg.- India - Nepal relation
  India- USA relation

प्रबल मित्र सितम्बर 2016 में भारत व कजाकिस्तान के मध्य हुआ सैन्य अभ्यास

भारत में इस संबंध में मुख्य जिम्मेदारी विदेश मंत्रालय की होती है । परंतु अन्य मंत्रालय भी इसमें भूमिका निभाते है जैसे IMF एवं World Bank के साथ भारत के संबंध में वित्त मंत्रालय की भूमिका।

- Who में भारत संबंध का संचालन स्वास्थ्य मंत्रालय करता है। परंतु समन्वय की भूमिका विदेश मंत्रालय की होती है। साथ ही प्रधानमंत्री की भी विदेश संबंधो में महत्वपूर्ण भूमिका होती है एवं अन्य राष्ट्रो के साथ समझौता एवं बातचीत प्रधानमंत्री द्वारा ही किये जाते है।
- विदेश संबंधो में भारत के राष्ट्रपति की भूमिका प्रतिकात्मक होती है।

विदेश नीति में,

- ऐसी नीति की पहचान जिसमें हम अपने लक्ष्यो तक पंहुच सकते है।

- इसके कार्यान्वन में कूटनीति का बहुत महत्व है।
- इसमें अनेक जटिलताएँ होती है इसके संबंध में अलग दृष्टिकोण हो सकते है इसी कारण यह प्रयास होना चाहिए की विदेश नीति निर्धारण में अलग विचारो एवं दृष्टिकोणो को ध्यान में रखा जाये।
  उदा0 – कोरियाई युद्ध में की कूटनीतिक गलती।
- विदेश नीति में बहुपक्षीय एवं द्विपक्षीय नीतियाँ
  विदेशनीति – उदा0 – जम्मू कश्मीर में शांति वार्ता की मांग की जाये परंतु परिणाम दूसरे देश की नीति पर भी निर्भर करेगा।
  बहुपक्षीय नीति – भारत पाक संबंध में चीन की अपनी नीति जिसमें उसके हित निहित होगे जिसका असर भारत कई सफलता एवं विफलता पर पडेगा। साथ ही इसमें USA का भी Involvement हो सकता है।

कूटनीति,

- विदेश नीति का औजार।
- विदेश नीति के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक तरीका।
- विदेश मंत्रालय के अधिकारी, विदेशमंत्री, प्रधानमंत्री की भी भूमिका सम्भव।

<u>आधुनिक कूटनीति</u> :–

<u>Multi Track Diplomacy :-</u>

Track 1. - परम्परागत कूटनीति – राजदूत विदेश मंत्री आदि स्तर पर होने वाली बातचीत।

Track 2. - दो राज्यो के बीच अपेक्षाकृत अनौपचारिक बातचीत सामान्यतः यह बातचीत गैर सरकारी लोगों के बीच होती है। लेकिन इन्हे अपने देश का समर्थन व विश्वास प्राप्त है।

उदाहरण Retired पदाधिकारी, भूतपूर्व मंत्री।

ये बातचीत सरकारी स्तर की नहीं होती है अतः इसके संबंध में मीडिया का ध्यान, देश के लोगों की अपेक्षाओ के कारण दबाव नहीं पैदा होता है। इन्हे सरकारी स्तर पर आवश्यकता पडने पर इनका खण्डन किया जा सकता है।

आजकल इस प्रणाली का प्रयोग अक्सर होता है जिनमें उदाहरण स्परूप भारत–पाकिस्तान संबंध में।

पूर्व में इसका प्रयोग आदि के मध्य हुआ था।

कई बार Track 2 Diplomacy के परिणामस्वरूप संबंध सुधारते है एवं समस्याओं का समाधान निकलता है।

Track 3.- गैर सरकारी स्तर पर संबंध बनाना।

विशिष्ट अर्थ – व्यवहारिक व व्यवसायिक संगठन आदि के बीच मे संबंध।

Track 4.- इसमें सांस्कृतिक संबंध बनाना।

(Soft power related)

Track 5.- Media Related

Track 6.- Research Related

Track 7.- Religion Related

Public Diplomacy :-

- नरम शक्ति का उपयोग करके अन्य राज्य के लोगों को प्रभावित करना। अपने प्रति उनके रवैया को सकारात्मक बनाने का प्रयास।
- जनता को प्रभावित करने हेतु।
- विदेश मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले Diplomacy का एक प्रभाग।
- विश्व की वर्तमान स्थिति में विदेश संबंध एवं विदेश नीति का बढता महत्व

आज की वैश्विक स्थिति :-

- आज के विश्व में देशो के बीच पारस्परिक अंतनिर्भरता अधिक हो गई है जैसे- व्यापार एवं अन्य प्रकार के आदान-प्रदान (पूंजी, प्रौद्योगिकी) । ये ऐसे राज्यो के बीच होता है जिसमें तनाव एवं समस्याएँ है जैसे - भारत-चीन, अमेरिका-चीन एवं जापान-चीन आदि।
- सैन्य संबंध एवं सैन्य गुट/गंठबधंन जैसे NATO इसमें भारतीय नीति सदैव ऐसे गंठबंधनो से दूर रहने की रही है।
- व्यापार समझौता, दो राज्यो के मध्य व्यापार बढाने हेतु किये जाते है। मुक्त व्यापार क्षेत्र में भारत की सहभागिता रही है एवं अभी भी भारत के संबंध में अन्य राज्यो से बातचीत कर रहा है।
- अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो में अवसरों के साथ खतरे भी रहे है -
- ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि
- विदेश खतरे-इसमें प्रत्यक्ष विदेशी हमला, जैसे - चीन द्वारा भारत पर हमला, 1962 ,खतरा, जब नाभिकीय शस्त्र या भीषण हथियारो का उपयोग किया जाता है। परंतु इनका व्यवहार में नहीं किया जाता है।

विदेश नीति के सकारात्मक अवसर:-

- व्यापार से आर्थिक संवृद्धि को बढावा।
- विदेश निवेश जिसमे उत्पादन क्षमता बढती है।
- विदेश प्रौद्योगिकी की प्राप्ति।
- पर्यटन एवं अन्य सेवा क्षेत्रो के संबंध में लाभकारी।
- सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संबंधो की संभावना।

अन्य देशो के साथ भारत के धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध :-

- धार्मिक विचारो का आदान-प्रदान जैसे बौद्ध व हिन्दु धर्म का प्रसार पूर्वी एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया में चीन, जापान, उत्तर कोरिया, थाइलैण्ड, म्यांमर आदि।
- इस्लाम धर्म का आगमन।
- अरब देशों के साथ व्यापार संबंध।
- यूरोप के साथ व्यापार संबंध।
- दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापक संबंध।
- ईसाई धर्म का भारत में आगमन।

विदेश नीति के संबंध में, सर्वप्रथम पडोसी राज्य बहुत महत्वपूर्ण होते है इसके मुख्यतः कारण भौगोलिक कारक।

देश/राज्यो की आन्तरिक स्थिति का भी भारत पर असर जैसे -

(1) नेपाल में मधेसी समुदाय के लोगों की समस्या का संकट।
(जिससे भारत को काफी चिंता हुई)
(2) श्रीलंका के तमिल निवासी से संबंधित विवाद से भी भारत प्रभावित।

प्रभाव -
(इन मसलो का 1 भारतीय राजनीति पर भी पडता है)

विस्तृत पडोसी देश :-

- पूर्वी एशिया -ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंध।
  आधुनिक समय में आर्थिक संबंध बहुत कमजोर हो जाने के कारण भारत सरकार को Look East Policy का निर्माण करना पडा।

पश्चिम एशिया :-

- तेल एवं गैस का प्रमुख स्त्रोत
- व्यापारिक संबंध भारत के साथ।
- भारतीय मूल के लोगों का पश्चिमी एशिया मुद्रा में निवास।
- विदेश मुद्रा प्रवाह का भी प्रमुख स्त्रोत।

मध्य एशिया :-

- भारत से परंपरागत संबंध प्राकृतिक संसाधनो के मामले में सम्पन्न।
- भू-राजनीतिक एवं सामरिक भूमिका महत्वपूर्ण।

भारत विदेश नीति का विकास :-

- स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति में, भारतीय विदेश नीति का निर्धारण ब्रिटिश सरकार द्वारा होता था।
  परंतु स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने भी विदेश संबंधी मसलो पर विचार किया और भारत के लिए एक स्वतंत्र विदेश नीति की बात की।
- इसमे सबसे महत्वपूर्ण भूमिका जवाहर लाल नेहरू की थी परंतु और भी राष्ट्रीय अन्दोलन के नेताओं का भी महत्व।
- दूसरा विश्व युद्ध के आरम्भ में, अंग्रेजी शासको ने भारत को भी युद्ध में शामिल कर दिया। इसी विरोध में कांग्रेस पार्टी की प्रांतीय सरकारो ने त्यागपत्र दे दिया।
- कांग्रेस नेताओं का मानना था कि इस प्रकार के फैसले से पूर्व भारतीय जनता के प्रतिनिधियो से विचार विमर्श करना चाहिए था।
- स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय विदेश नीति महत्वपूर्ण हुई। जब सत्ता भारतीय नेताओ के हाथ में आयी।
- जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री के साथ विदेश मंत्री का उत्तरदायित्व भी सम्भालते थें। वैदेशिक मामलो में उनकी सर्वाधिक जानकारी एवं रूचि थी अन्य नेताओं की तुलना में परंतु विदेश नीति की स्थापना में मध्य व्यक्तिगत विचारो का महत्व नहीं था इससे ज्यादा महत्व वैश्विक स्थिति एवं राज्यो के हित का था वैश्विक स्थिति में शीत युद्ध महत्वपूर्ण हुआ दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात USA एवं USSR के मध्य बढने वाले तनाव ने अन्ततः शीत युद्ध का रूप लिया।

Cold war

USA ← → USS

USA	USS
सहयोगी राज्य	सहयोगी राज्य
जो कि	समाज्यवादी गुट
पूंजीवादी देश	आधारित प्रणाली – state controllers ownership
	लोकतांत्रिक प्रणाली रहित गुट

- भारत जो कि लोकतान्त्रिक राष्ट्र परंतु यह USA एवं USSR की आर्थिक एवं विदेश नीतियो से असहमत था तथा USSR की राजनीति प्रणाली से भी असहमत था।
- ये दोनो गुट सैन्य कारण को बढावा दे रहे थें।
- इस स्थिति में ही गुट निरपेक्षता के सिद्धांत का विकास हुआ। भारत इस सिद्धांत के प्रमुख प्रतिपादको में था।

<u>नरसिम्हा राव से I. K. Gujral और अटल बिहारी वाजपेयी तक विदेश नीति</u> :–

– 90 के दशक में, वी. पी. सिंह की सरकार बनी जिसके विदेश मंत्री बने गुजराल जो कि विदेश नीति को समझने में संयत और चतुर थें। लेकिन सरकार थोडे समय ही रही और विदेश नीति पर उसका कोई चिरस्थायी प्रभाव नहीं पडा।

– परंतु विदेश मंत्री और बाद में पी. एम. के तौर पर गुजराल के पास एक अतिरिक्त एवं अधिक उपयोगी सहज बुद्धि थी। उस दौरान विश्व में कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं घटी । जिनमे ईरान के विरूद्ध हुआ हथियार बंद हमला, असंतुष्ट सद्दाम हुसैन ने अगस्त 1990 में कुवैत हमले का फैसला किया जो एक सप्रभुत्ता संपन्न राष्ट्र व UN सदस्य था। जिसमें लाखो लोग मारे गये और अन्य परिणामो का अनुमान लगाना मुश्किल । यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था और यदि यह क्षेत्र कुवैत की जगह दूसरे होते हो अमेरिका शायद कुवैत आक्रमण को रोकने के लिए उच्च स्तरीय चढाई न करना। यह तेल दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं उपयोगी क्षेत्र अर्थात यदि कहा जाये औद्योगिक जगत की जीवन रेखा खाडी से होकर गुजरती हैं। और उस जीवन रेखा पर एक तानाशाह को चेन से बेठने की इजाजत देना उचित नहीं था।

– कुवेत में अन्ततः इराक की हार, फौज की वापसी के बाद भी इराक पर दबाव बना रहा। इराक पर घेराबंदी कर दिन–रात बमबारी की जिसमे UN की और से मानवीय आधार पर थोडी बहुत राहत दी गई। तब से इराक जनता को अमन–चैन नसीब नहीं हुआ। भुखमरी से बच्चे अल्प पोषण और कमजोरी के शिकार बनते रहे ।

- Un international emergency children fund के अध्ययनुसार 1991–98 तक इराक के खिलाफ लगे प्रतिबंधो से 5 लाख बच्चे सीधे मौत के मुंह में चले गये।

बहरहाल,
खाडी युद्ध के मामले में भारत का धर्मसंकट अनेक कारणों से था इराक जो कि धर्म निरपेक्ष देशों में से था और यह इस्लामिक राज्यो के संगठन से अलग रहा था। और वहाँ पारित भारत विरोधी प्रस्तावों का हिस्सा नहीं बना तथा कश्मीर के मामले में भारत की स्थिति पर सबसे बुद्धिमत्तापूर्ण रूख अपनाया था।
इसका एक आर्थिक आयाम भी था। जिससे भारत को इरान इराक युद्ध से वैसे भी काफी नुकसान हो चुका था जिसका असर भारतीय व्यवसायिक प्रतिष्ठान संख्या में कमी च इंजीनियरी, तकनीशियनो आदि की संख्या में कमी के रूप में देखने को मिलती है।